2. अर्थबोध प्रणाली –

इस प्रणाली में शिक्षक स्वयं कविता का अर्थ बताता चलता है। बालक की रुचि तथा रसानुभूति का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। अतः यह प्रणाली दूषित और त्याज्य है।

3. व्याख्या प्रणाली –

इस प्रणाली में अध्यापक एक-एक पद लेकर उसका अर्थ करता हुआ कवि का दार्शनिक मत, प्रवृत्ति उसकी रचना-शैली, परिस्थिति, कविता की भाषा, अलंकार भाव, रस आदि की व्याख्या करके पद का अर्थ स्पष्ट करता चलता है। यदि उसमें कोई अन्तर्कथा होती है तो उसका भी ज्ञान करा देता है। इस प्रणाली का प्रयोग केवल माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में ही होना चाहिए।

4. खण्डान्वय-प्रणाली –

इसको प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहते हैं। यह प्रणाली उन पदों के पढ़ाने के काम आती है जिनमें विशेषणों की भरमार हो, भावों की भीड़ हो, घटनाओं की घटा हो और एक-एक बात का अर्थ स्पष्ट किये बिना स्पष्टता न आती हो। इस प्रणाली का प्रयोग केवल वर्णनात्मक तथा ऐतिहासिक पद्यों के पढ़ाने में ही किया जाता है।

5. व्यास-प्रणाली–

यह मुख्यतः उच्च श्रेणी की भाव-प्रधान कविताओं के पढ़ाने के लिए प्रयोग की जाती है। इस प्रणाली में पद को भाषा और भाव दोनों की दृष्टि से परखा जाता है। भाव के स्पष्टीकरण के लिए अनेक उदाहरणों दृष्टान्तों, सूक्तियों तथा कथाओं का प्रयोग कर अध्यापक व्याख्या करता है। भाषा की दृष्टि से विचार करते समय अध्यापक एक-एक शब्द उसकी उपादेयता, शब्द-बल, दोष तथा वाक्य-विन्यास का स्पष्टीकरण करता चलता है। अतः इस प्रणाली में अध्यापक को विषय का गहन ज्ञान अपेक्षित है। बालकों की रुचि, उत्साह तथा उल्लास को बनाये रखने के लिए अध्यापक को कुशल अभिनेता भी होना चाहिए। भावात्मक कविताओं में इसी प्रणाली का प्रयोग उत्तम माना जाता है।

6. तुलनात्मक प्रणाली–

इस प्रणाली में सम-भाषा कवि, भिन्न-भाषा कवि की तुलना तथा भाव-तुलना द्वारा साम्य और असाम्य दोनों का विवेचन किया जाता है। साथ ही एक ही कवि अपने बनाये हुए

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

विभिन्न काव्यों में एक ही बात कई भावों या उद्देश्यों से कहता है। ऐसे भावों या वर्णनों को तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में विवेचन तथा तर्कशक्ति का विकास होता है। ज्ञान का विस्तार होता है। कवि के उद्देश्यों, कविता के विभिन्न स्वरूपों तथा कवि- शैली का भी परिज्ञान हो जाता है।

7- समीक्षा-प्रणाली-

इस प्रणाली द्वारा अध्यापक 'प्रश्नोत्तर विधि' का आश्रय लेकर कवि की समीक्षा करता है। तथा विद्यार्थियों को आलोचना के सिद्धान्त बताकर सहायक पुस्तकों की सहायता से समष्टि रूप से एक कवि की रचनाओं अथवा कविताओं की समीक्षा करने को कहता है। अतः यह प्रणाली उच्च- कक्षाओं के लिए उपयोगी हो सकती है।

26/04/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया